जिसने जैसा चाहा है परमात्मा को वैसा ही पाया है: वंदनाश्री

कलश यात्रा के बाद प्रारंभ हुई सदृश्य श्रीमद् भागवत कथा ने श्रोताओं का मन मोह लिया

देवास@पत्रिका. सत्य के ज्ञान के साथ आनंद में जीने वालों का जीवन ही मंगलमय होता है। श्रीमद भागवत जीवन जीना सिखाती है। चमत्कार के पीछे नहीं भक्ति के पीछे भागो। चमत्कार भ्रम पैदा करता है और भक्ति अध्यात्म पैदा करती है। भ्रम से जीवन में निराशा उत्पन्न होती है और भक्ति से भगवान की प्राप्ति होती है। जहां प्रेम वहां मेरे ठाकुर हैं। उसे भक्ति से जिस रूप में देखना चाहोगे वो आपको उस रूप दिखेगा, जिसने जैसा चाहा है परमात्मा को वैसा पाया है। यह आध्यात्मिक विचार चैत्र नवरात्रि में कैलादेवी मंदिर में आयोजित संगीत व दृष्यमय श्रीमद् भागवत कथा का वर्णन करते हुए अंतरराष्ट्रीय ब्रज रत्ना भगवताचार्या वंदना श्रीजी ने व्यक्त किए। देवास में पहली बार दृष्यमय कथा को देख श्रोतागण भाव-विभोर हो गए। ब्रज के कलाकारों की इतनी सुंदर अभिनय वाली भागवत कथा पहली बार देखने को मिली। कथा के पूर्व कैलादेवी मंदिर से कथा स्थल तक निकली कलश यात्रा में महापौर गीता अग्रवाल, समिति अध्यक्ष दुर्गेश अग्रवाल ,दीपक गर्ग, अनामिका गर्ग, जयेश, प्राची गर्ग, योगेश बंसल, हरीश गोयल सहित समिति के पदाधिकारियों ने सिर पर भागवत धारण की। व्यास पीठ की पूजा आयोजक मन्नूलाल गर्ग व परिवार ने की। आरती में कथा संयोजक रायसिंह सेंधव, राष्ट्रीय कवि देवकृष्ण व्यास, पूर्व महापौर रेखा वर्मा, राजेश यादव, रमण शर्मा, राजेश पटेल, अजब सिंह ठाकुर, चंद्रपाल सिंह सोलंकी, राजीव शर्मा, रवि सोनी आदि उपस्थित थे। संचालन चेतन उपाध्याय ने किया।